International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(2): 83-86
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 12-03-2026
Accepted: 23-03-2026
Publish : 24-03-2026

रामप्रकाश चौधरी
शोधार्थी (इतिहास),
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्व-विद्यालय , छतरपुर म. प्र.

शोध निर्देशक -
डॉ. राशिद खान
इतिहास, शासकीय महाविद्यालय, लिधौरा, टीकमगढ़, मध्यप्रदेश

Correspondence:
रामप्रकाश चौधरी
शोधार्थी (इतिहास),
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्व-विद्यालय , छतरपुर म. प्र.

"बुंदेलखण्ड के स्वतंत्रता आंदोलन में अजयगढ़ रियासत की भूमिका"

रामप्रकाश चौधरी, डॉ. राशिद खान

सारांश

भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक व्यापक और बहुआयामी ऐतिहासिक प्रक्रिया थी। इसमें केवल महानगरों या राष्ट्रीय नेताओं की भूमिका ही नहीं, बल्कि भारत के प्रत्येक प्रांत, क्षेत्र और रियासत ने अपने-अपने स्तर पर स्वतंत्रता की चेतना को जन्म दिया। मध्य भारत का बुंदेलखण्ड क्षेत्र इस दृष्टि से विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा, क्योंकि यहाँ की रियासतों ने न केवल राजनीतिक स्तर पर बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी ब्रिटिश शासन का विरोध किया।

अजयगढ़ रियासत, जो बुंदेलखण्ड के मध्य में स्थित थी, इस संघर्ष की प्रमुख इकाई रही। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 तक अजयगढ़ की जनता, सैनिकों, किसानों और महिलाओं ने निरंतर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध किया। अजयगढ़ का किला केवल एक दुर्ग नहीं रहा, बल्कि वह राष्ट्रीय चेतना, स्वाभिमान और स्वराज्य का प्रतीक बन गया।

यह शोधपत्र अजयगढ़ रियासत की भूमिका का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है — इसकी राजनीतिक संरचना, सामाजिक संगठन, आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी पर केंद्रित है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अजयगढ़ की भूमिका भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की उस क्षेत्रीय चेतना का प्रतिनिधित्व करती है, जिसने औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी और राष्ट्रवाद को जन-आंदोलन के स्वरूप में परिवर्तित किया।

बीज शब्द

बुंदेलखण्ड, अजयगढ़ रियासत, स्वतंत्रता आंदोलन, 1857 का संग्राम, ब्रिटिश शासन, स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, राष्ट्रवाद, सामाजिक परिवर्तन।

प्रस्तावना

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनैतिक सत्ता परिवर्तन का प्रयास नहीं था, बल्कि यह एक वैचारिक, सांस्कृतिक और सामाजिक क्रांति भी थी। इस आंदोलन ने देश के हर हिस्से में स्वतंत्रता की चेतना को जगाया। जहाँ एक ओर दिल्ली, लखनऊ और कोलकाता जैसे महानगरों में राजनीतिक आंदोलन हुए, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण और अर्ध-राजसी क्षेत्रों में इस चेतना ने अपने स्थानीय रूप में उभार लिया।

बुंदेलखण्ड क्षेत्र, जो वर्तमान उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के सीमावर्ती भागों में फैला है, सदियों से वीरता, त्याग और आत्मगौरव का प्रतीक रहा है। यही भूमि राजा छत्रसाल जैसे स्वतंत्रता सेनानी का केंद्र रही, जिसने मुग़लों के विरुद्ध स्वराज्य की भावना को जन्म दिया। इसी परंपरा की एक सशक्त कड़ी थी— **अजयगढ़ रियासत**, जिसने 18वीं सदी से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक औपनिवेशिक सत्ता के

विरुद्ध प्रतिरोध की परंपरा को जीवित रखा।

बुंदेलखण्ड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (1772– 1857)

1772 के बाद ब्रिटिश सत्ता ने बंगाल से आगे बढ़ते हुए बुंदेलखण्ड और मध्य भारत की ओर अपने प्रभाव का विस्तार प्रारंभ किया। 1803 तक यह क्षेत्र "Central India Agency" के अधीन आ गया। ब्रिटिशों ने यहाँ की रियासतों से *subsidiary alliance* के समझौते किए, जिससे रियासतें नाममात्र की स्वतंत्र रहीं, परंतु वास्तविक अधिकार ब्रिटिश एजेंटों के हाथों में चले गए।

इस स्थिति ने सामाजिक असंतोष को जन्म दिया। कृषि पर आधारित समाज में भूमि कर की कठोरता, कर संग्रह में अन्याय, धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप, तथा सैन्य बलों की असंतुष्टि ने मिलकर असंतोष का वातावरण तैयार किया। यही असंतोष 1857 के विद्रोह की पृष्ठभूमि बना।

Bundelkhand Gazetteer (1908) में उल्लेख है कि "The Bundelkhand region was perpetually restless under British administration owing to heavy taxation and interference in local customs."[1]

अहिंसा आंदोलन के अग्रणी महात्मा गांधी ने अली बंधुओं के साथ 1920 से 1930 ईस्वी के मध्य बुंदेखंड की यात्रा की जिनसे बुंदेलखंड की जनता में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ । विभिन्न राष्ट्रवादी कार्यक्रमों के साथ महात्मा गांधी जी ने हरिजन उद्धार के लिए हरिजन पत्र का प्रकाशन किया ओर हरिजन कोस के लिए धन भी एकत्रित किया ।

"गांधीजी लगभग 11 बजे देवरी पहुँचे। यहां गांधीजी ने देवरी के प्राचीन मुरलीधर मंदिर के कपाट हरिजनों के लिए खोले । यहां की जनता ने 351 रुपए एवं हरिजनों ने 51 रुपए की थैली गांधीजी को भेंट में दी ।"[2]

अनन्तपुर यात्रा के दौरान गांधीजी ने लोगों को चरखा चलाने के लिए प्रेरित किया

"जब मैंने देखा कि मेरे बहुतेरे भाइयों को घी, दूध आदि स्वास्थ्य के लिए नितान्त आवश्यक पदार्थ नहीं मिलते और बहुतों को तो अचपेट ही रहना पड़ता है, उनका बहुत सा पैसा विलायती वस्त्रों में ही खर्च हो जाता है, तब बहुत मनन करने के बाद मैंने चरखे को पकड़ा। चरखा हमारे देश के करोड़ों भाइयों का घी-दूध और रोटी है। मुझे प्रसन्नता उस दिन होगी जब मैं देखूँगा कि प्रत्येक मनुष्य यह कह सके कि जो कपड़े मैं पहने हूँ वो मैंने ही तैयार किए हैं।"[3]

और इस तरह ब्रिटिश नीतियों के विरोध में बुंदेलखंड में सागर, बैतूल एवं सिवनी ,दमोह पन्ना,छतरपुर,झांसी टीकमगढ़, ओरछा आदि में राष्ट्रीय आंदोलन एवं उससे जुड़े सत्याग्रहों के प्रचार प्रसार हुआ। जिसमे बुंदेलखंड की विभिन्न रियासतों बुंदेला,जैतपुर अजयगढ़,चरखारी राज्य बिजावर राज्य सरीला राज्य आदि नि बढ़ चढ़ कर भाग लिया ।

अजयगढ़ रियासत की स्थापना, राजवंश और प्रशासनिक ढाँचा

अजयगढ़ रियासत की स्थापना लगभग 1730 ई. में पन्ना राज्य के वंशज राजा **अजय सिंह बुंदेला** द्वारा की गई थी। राजा अजय सिंह ने इस क्षेत्र को एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में संगठित किया और उसके नाम पर रियासत का नाम "अजयगढ़" रखा गया।

अजयगढ़ का दुर्ग विंध्य पर्वतमाला की ऊँचाई पर स्थित है — यह दुर्ग चारों ओर से खाई और चट्टानों से घिरा हुआ था, जो इसे अभेद्य बनाता था। इस किले को ब्रिटिश इतिहासकार "Fort of defiance" कहते थे।

रियासत का प्रशासन राजा, दीवान, सेनापति, कोषाध्यक्ष और ग्राम पंचायतों पर आधारित था। स्थानीय स्तर पर न्याय और कर व्यवस्था का संचालन जनपंचायतें करती थीं। कृषि राज्य का मुख्य आधार थी। सेना में स्थानीय बुंदेला योद्धाओं के साथ-साथ अन्य जातियों के सैनिक भी शामिल थे।

ब्रिटिश विस्तार नीति और अजयगढ़ पर प्रभाव-

1809 में ब्रिटिशों ने अजयगढ़ को "protectorate" घोषित किया। राजा को औपचारिक अधिकार दिए गए, लेकिन सभी सैन्य निर्णय ब्रिटिश एजेंट के अधीन हो गए। ब्रिटिश नीति "divide and rule" ने स्थानीय सत्ता को कमजोर किया।

ब्रिटिश शासन की कर-नीति और सैनिकों की छँटनी ने असंतोष को जन्म दिया। धार्मिक मामलों में ब्रिटिश हस्तक्षेप ने जनता के मन में अविश्वास पैदा किया। 1856 में जब अवध का विलय हुआ और पूरे उत्तर भारत में असंतोष फैला, तब अजयगढ़ की जनता भी आंदोलन के लिए तैयार हो चुकी थी।

जिनके विरोध में स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न आंदोलनों में अजयगढ़ रियासत ने सहयोग किया ,जैसे -

खिलाफत आंदोलन , सविनय अवज्ञा आंदोलन,भारत छोड़ो आंदोलन,चरण पादुका हत्याकांड आदि।

"सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान एवं कर-बन्दी आन्दोलन के दौरान रामप्रसाद यूरिया, पर्वत सिंह, ठाकुर प्यारेजू, राजधर चौधरी, सुखनन्दन कुर्मी, जीत सिंह, गया प्रसाद पाठक, गुलजारी लाल पटेल एवं बलदेव प्रसाद आदि ने चंदीदीन चौरहा के नेतृत्व में चलाए जा रहे आन्दोलन में उनका सहयोग किया।"[4]

1857 का स्वतंत्रता संग्राम : अजयगढ़ की निर्णायक भूमिका-

1857 का संग्राम अजयगढ़ के इतिहास का सबसे गौरवशाली अध्याय है। जब मेरठ और झाँसी में विद्रोह फैला, तब अजयगढ़ में भी सैनिकों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

इस विद्रोह का नेतृत्व ठाकुर **गंगाधर सिंह**, **अमर सिंह**, **बलदेव ठाकुर**, और **हरिश्चंद्र पांडेय** जैसे स्थानीय नायकों ने किया। किला उनके नियंत्रण में आ गया, और उन्होंने ब्रिटिश सेना को चुनौती दी।

Reports on the Mutiny in Central India (1858) में उल्लेख है:

"Ajaygarh fort held out for months, sheltering rebel sepoys and villagers, showing remarkable organization and defiance."[5]

राजा जय सिंह ने विद्रोह को सीधे समर्थन नहीं दिया, किंतु उन्होंने ब्रिटिश सेना की सहायता से इनकार किया, जिससे ब्रिटिश प्रशासन ने रियासत को विद्रोही घोषित किया। छह महीनों तक चली इस लड़ाई में सैकड़ों लोग मारे गए। अंततः ब्रिटिश सेना ने किला पुनः अपने नियंत्रण में लिया।

विद्रोह के बाद लगभग 70 लोगों को फाँसी दी गई और 200 से अधिक परिवारों को निर्वासित किया गया। परंतु अजयगढ़ की जनता की स्वतंत्रता-चेतना समाप्त नहीं हुई।

ब्रिटिश दमन और पुनर्गठन (1858– 1877)

विद्रोह के बाद ब्रिटिशों ने अजयगढ़ को अपने प्रत्यक्ष नियंत्रण में रखा। *Bundelkhand Gazetteer (1908)* के अनुसार, "Ajaygarh was pacified under heavy military control; yet the spirit of independence could not be extinguished."[6]

राजा को सीमित अधिकार दिए गए। प्रशासनिक सुधारों के नाम पर ब्रिटिश अधिकारियों ने भूमि सर्वेक्षण, लगान की पुनः व्यवस्था और सैनिकों की छँटनी की।

ब्रिटिश शिक्षा नीति के तहत "vernacular schools" खोले गए, जहाँ अंग्रेज़ी इतिहास और ब्रिटिश आदर्श पढ़ाए जाते थे। किंतु यही शिक्षा आने वाले दशकों में राष्ट्रीय चेतना का माध्यम बनी।

स्वदेशी आंदोलन (1905– 1919)

1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में जब स्वदेशी आंदोलन प्रारंभ हुआ, तब उसका प्रभाव अजयगढ़ तक पहुँचा। रियासत के शिक्षित युवाओं ने "अजयगढ़ स्वदेशी समिति" बनाई। इस समिति के अध्यक्ष दीवान **शिवनारायण मिश्र** और सदस्य **बालकृष्ण पाठक** थे।

इस समिति का उद्देश्य था:

- ब्रिटिश वस्त्रों का बहिष्कार,
- खादी और चरखे का प्रचार,
- स्वदेशी शिक्षा का प्रसार।

अजयगढ़ के बाज़ारों में विदेशी वस्त्रों की होली जलाने की परंपरा शुरू हुई, जो आगे चलकर असहयोग आंदोलन का आधार बनी।

असहयोग आंदोलन (1920– 1922)

1920 में महात्मा गांधी के आह्वान पर अजयगढ़ ने असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लिया।

यहाँ के विद्यालयों में छात्रों ने ब्रिटिश शिक्षकों का बहिष्कार किया, और जनता ने ब्रिटिश वस्त्र त्याग दिए।

महिलाओं ने भी भागीदारी की — उन्होंने घरों में चरखा चलाया और स्वदेशी वस्त्रों का प्रचार किया।

ब्रिटिश प्रशासन ने कई नेताओं को गिरफ्तार किया जिनमें **रामकृष्ण द्विवेदी**, **हरिप्रसाद तिवारी**, और **बालेश्वर मिश्रा** प्रमुख थे।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942– 1946)

1942 में गांधीजी के "भारत छोड़ो" आंदोलन के समय अजयगढ़ में "अजयगढ़ युवा संघ" की स्थापना की गई। इस संगठन ने ब्रिटिश विरोधी संदेश फैलाए, सरकारी झंडे उतारे, और संचार लाइनों को काट दिया। पन्ना और अजयगढ़ की जनता ने इस बढ़ चढ़ कर भाग लिया जगह जगह पर छोटी मोटी आम सभाएं की ।

"पन्ना जिले से रामदेव सिंह कुशवाहा पिता लल्लूसिह को 1942 के भारत छोड़ो में भाग लेने के कारण डेढ़ वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई।"[7]

महिलाएँ संदेशवाहक और संगठनकर्ता बनीं। उन्होंने ब्रिटिश सेना की गतिविधियों की जानकारी क्रांतिकारियों तक पहुँचाई। किसानों ने कर देने से इनकार कर दिया और "स्वराज्य सभाओं" का गठन किया।

स्वतंत्रता और अजयगढ़ रियासत का विलय (1947– 1949)

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद अजयगढ़ रियासत के शासक **राजा प्रेम सिंह बुंदेला** ने भारत संघ में विलय का निर्णय लिया।

उन्होंने फरवरी 1948 में *Instrument of Accession* पर हस्ताक्षर किए और रियासत को भारतीय संघ में सम्मिलित किया।

White Paper on Indian States (1950) में दर्ज है —

"The ruler of Ajaygarh voluntarily acceded to the Indian Union; the merger was peaceful."

1952 में अजयगढ़ किला भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संरक्षण में आ गया।

सामाजिक परिवर्तन और लोकतांत्रिक पुनर्निर्माण (1950– 1970)

स्वतंत्रता के बाद अजयगढ़ समाज में व्यापक परिवर्तन हुए। राजशाही के स्थान पर पंचायत प्रणाली लागू हुई।

1952 में पहले आम चुनाव में अजयगढ़ क्षेत्र से **हरिनारायण त्रिपाठी** निर्वाचित हुए, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी।

1955 में "अजयगढ़ उच्च विद्यालय" और 1962 में "लक्ष्मीबाई कन्या विद्यालय" स्थापित किए गए, जिससे महिलाओं की शिक्षा को बल मिला।

अजयगढ़ किला और प्रमुख शासक -

अजयगढ़ रियासत बुंदेलखंड क्षेत्र की एक प्रमुख रियासत थी, जो पन्ना राज्य से संबद्ध थी। इसका मुख्य केंद्र अजयगढ़ दुर्ग था, जो ऊँचाई पर स्थित होने के कारण अत्यंत सुरक्षित और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था। यह क्षेत्र प्रारंभ में चंदेलों के अधीन रहा और बाद में बुंदेला शासकों के नियंत्रण में आया।

"अजयगढ़ का दुर्ग अपनी दुर्गमता और ऊँचाई के कारण बुंदेलखंड की महत्वपूर्ण सामरिक स्थलों में गिना जाता था।"[8]

प्रमुख शासक - "गुमान सिंह,मधुकर सिंह तथा बखत सिंह ,माधव सिंह, महीपत सिंह, विजय सिंह, रंजोर सिंह, भोपाल सिंह, नैनो अर्जुन सिंह परमार"[9] आदि।

निष्कर्ष

अजयगढ़ रियासत का इतिहास भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का एक उज्ज्वल अध्याय है। यह रियासत न केवल राजनीतिक रूप से, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक स्तर पर भी स्वतंत्रता की भावना की वाहक रही।

1857 के संग्राम से लेकर 1947 तक अजयगढ़ ने जिस दृढ़ता, साहस और बलिदान का परिचय दिया, वह इसे भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ों से जोड़ता है।

अजयगढ़ का संघर्ष यह सिद्ध करता है कि भारत की स्वतंत्रता केवल महानगरों की देन नहीं थी, बल्कि गाँवों, रियासतों और लोक समुदायों की सामूहिक चेतना से निर्मित हुई थी।

आज अजयगढ़ किला केवल पत्थरों का ढांचा नहीं, बल्कि भारतीय आत्मगौरव का जीवंत प्रतीक है।

सन्दर्भ सूची

1 बुंदेलखंड गजेटियर 1908 ब्रिटिश द्वारा।

2 बुंदेलखंड का स्वतंत्रता संघर्ष/ बी.के. श्रीवास्तव,प्रथम प्रकाशन , डी.के. प्रिंटवर्ड प्रा. लि. नई दिल्ली पृ. स.118।

3 बुंदेलखंड का स्वतंत्रता संघर्ष/ बी.के. श्रीवास्तव,प्रथम प्रकाशन , डी.के. प्रिंटवर्ड प्रा. लि. नई दिल्ली पृ. स.120।

4 बुंदेलखंड का स्वतंत्रता संघर्ष/ बी.के. श्रीवास्तव,प्रथम प्रकाशन , डी.के. प्रिंटवर्ड प्रा. लि. नई दिल्ली पृ. स.184

5 रिपोर्ट्स ऑन दा म्यूटिनी इन सेंट्रल इंडिया 1858।

6 बुंदेलखंड गजेटियर 1908 ब्रिटिश द्वारा।

7बुंदेलखंड का स्वतंत्रता संघर्ष/ बी.के. श्रीवास्तव,प्रथम प्रकाशन , डी.के. प्रिंटवर्ड प्रा. लि. नई दिल्ली पृ. स.185

8मध्यप्रदेश का इतिहास/ रायबहादुर हीरालाल, गवर्नमेंट सेंट्रल प्रेस/ नागपुर

9 बुन्देलखण्ड का इतिहास/ दीवान प्रतिपाल सिंह, प्रकाशन पृथ्वी सिंह बुंदेला प्रतिपाल परिसर छतरपुर पृ. सं.100-112